नैदानिक मनोविज्ञान (**Clinical Psychology**) और असामान्य मनोविज्ञान (**Abnormal Psychology**) अक्सर एक जैसे लग सकते हैं क्योंकि दोनों का संबंध मानसिक समस्याओं से है। हालाँकि, इनके बीच एक स्पष्ट और मौलिक अंतर है: **असामान्य मनोविज्ञान 'सिद्धांत और शोध' (Theory & Research) पर केंद्रित है, जबकि नैदानिक मनोविज्ञान 'उपचार और प्रयोग' (Practice & Treatment) पर।**

यहाँ इनके बीच के मुख्य अंतरों का विस्तृत विवरण दिया गया है:

---

1. मुख्य फोकस (Primary Focus)

- **असामान्य मनोविज्ञान:** यह इस बात का अध्ययन करता है कि लोग असामान्य व्यवहार क्यों करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मानसिक विकारों के **कारणों (Etiology)**, लक्षणों और उनके पीछे के विज्ञान को समझना है। यह एक अकादमिक (Academic) क्षेत्र है।
- **नैदानिक मनोविज्ञान:** यह इस ज्ञान को वास्तविक लोगों पर लागू करने के बारे में है। इसका मुख्य उद्देश्य मानसिक विकारों का **निदान (Diagnosis)** करना और उन्हें थेरेपी के माध्यम से ठीक करना है। यह एक व्यावहारिक (Applied) क्षेत्र है।

---

2. तुलनात्मक तालिका (Comparison Table)

विशेषता	असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology)	नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)
परिभाषा	असामान्य व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन।	मानसिक विकारों का आकलन, निदान और उपचार।
लक्ष्य	यह समझना कि "मानसिक बीमारी क्या है और क्यों होती है?"	यह समझना कि "इस व्यक्ति की मदद कैसे की जाए?"

विशेषता	असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology)	नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)
कार्यक्षेत्र	मुख्य रूप से शोध (Research) और विश्वविद्यालयों में अध्ययन।	अस्पताल, क्लीनिक, और निजी परामर्श केंद्र।
दृष्टिकोण	सैद्धांतिक (Theoretical) - यह बीमारियों का वर्गीकरण करता है।	व्यावहारिक (Applied) - यह उपचार की योजना बनाता है।
उदाहरण	शोध करना कि डिप्रेशन के पीछे आनुवंशिक कारण क्या हैं।	डिप्रेशन से जूझ रहे व्यक्ति को CBT थेरेपी देना।

---

3. अंतर्संबंध (The Relationship)

इन दोनों को एक सिक्के के दो पहलुओं के रूप में देखा जा सकता है। असामान्य मनोविज्ञान वह आधार (Foundation) प्रदान करता है जिस पर नैदानिक मनोविज्ञान खड़ा है।

उदाहरण के लिए: यदि असामान्य मनोविज्ञान यह खोजता है कि फोबिया (Phobia) कैसे विकसित होता है, तो नैदानिक मनोवैज्ञानिक उस शोध का उपयोग करके फोबिया से ग्रस्त मरीज का इलाज करता है।

---

4. नैदानिक मनोविज्ञान और असामान्य मनोविज्ञान की सीमाएँ

असामान्य मनोविज्ञान के कार्य:

- मानसिक विकारों के लिए मानक स्थापित करना (जैसे DSM-5 या ICD)।
- यह तय करना कि "सामान्य" और "असामान्य" व्यवहार के बीच की रेखा कहाँ है।
- जनसंख्या में मानसिक रोगों की व्यापकता (Prevalence) का अध्ययन करना।

नैदानिक मनोविज्ञान के कार्य:

- रोगी का मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Testing) करना।

- विभिन्न उपचार पद्धतियों (जैसे CBT, Psychodynamic) का प्रयोग करना।
- रोगी की प्रगति की निगरानी करना।

निष्कर्ष (Conclusion)

संक्षेप में, **असामान्य मनोविज्ञान** हमें बताता है कि समस्या क्या है, जबकि **नैदानिक मनोविज्ञान** हमें बताता है कि उस समस्या को कैसे हल किया जाए। एक शोधकर्ता (Researcher) असामान्य मनोविज्ञान में माहिर हो सकता है, लेकिन एक चिकित्सक (Practitioner) को नैदानिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।